दु:खी दुनियाँ में सुरनायक

दु:खी दुनियाँ में सुरनायक, मुझे अब कुछ नहीं भाता ॥
कहाँ जाऊ करूँ क्या मैं, समझ कुछ भी नहीं आता,
दु:खी दुनियाँ में सुरनायक.....

जिन्हें समझा सदा अपना, हुए साबित पराये ही ॥
हुए साबित पराये ही,
दया-सागर दया करिये, दया-सागर दया करिये,
हृदय धीरज नहीं आता,
कहाँ जाऊँ करूँ क्या मैं, समझ कुछ-भी नहीं आता,
दु:खी दुनियाँ में सुरनायक.....

कपट मन में छुपा मानव, दिखाते प्रेम ऊपर से ॥
दिखाते प्रेम ऊपर से,
सताते एक दूजे को, सताते एक-दूजे को,
ये है कैसा अजब नाता,
कहाँ जाऊँ करूँ क्या मैं, समझ कुछ-भी नहीं आता,
दु:खी दुनियाँ में सुरनायक.....

करो अब नष्ट भारत से, हे गौरिसुत अमङ्गल को ॥
हे गौरिसुत अमङ्गल को,
सुखी माँ भारती होगी, सुखी माँ भारती होगी,
हे सिद्धि-बुद्धि के दाता,

कहाँ जाऊँ करूँ क्या मैं, समझ कुछ-भी नहीं आता,
दु:खी दुनियाँ में सुरनायक.....

(गीत रचना-अशोक कुमार खरे)

Source:
https://www.bharattemples.com/dukhi-duniyan-men-surnayak-mujhe-ab-kuch-nhi-baata/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw